Research Review
The Refereed Peer Reviewed International Journal
ISSN: 2321-4708
Vol. 10, Issue: 126, August, 2023
Paper ID: RRJ387067
https://www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/issues/volume-10-issue-126-august-2023/RRJ387067

महाभोज: एक सिंहावलोकन

माधवी कांतिभाई संदपा
हिन्दी विभाग
सौराष्ट्र विश्वविद्यालय

'महाभोज' भी मन्नू भंडारी के उपन्यास का नाट्य रूपांतरण है. इस उपन्यास में अपराध और राजनीति के गठजोड़ का यथार्थ चित्रण है। 1976 ई. में प्रकाशित उपन्यास की पहली पंक्ति - "लावारिस लाश को गिध नोच नोचकर खा जीते हैं।" है

'महाभोज' उपन्यास का कथानक विकृत राजनीति और भूले हुए मानवीय मूल्यों पर केन्द्रित है। कथानक राजनीतिक है. कहानी शुरू होती है कहानी तब शुरू होती है जब सरोहा गांव के बाहर सड़क के किनारे एक शव पड़ा हुआ मिलता है। यह शव बसेसर गांव के एक पढ़े-लिखे युवक का है। जिसे सभी लोग बिसू के नाम से जानते हैं। इस घटना को पहले हरिजनवास में लगी आग से जोड़ा गया है. आग लगने की इस घटना में नौ लोग जिंदा जल गये. दोनों घटनाओं का महत्व यह है कि डेढ़ महीने बाद विधानसभा की एक सीट के लिए उपचुनाव आ रहा है। चुनाव जीतने के लिए जोड़-तोड़ के लिए आग लगने की घटनाओं और बिसू की मौत को आधार बनाया जाता है। साथ ही संवेदनशील घटनाओं का इस्तेमाल अपने हित के लिए करता है. दा साहब कहानी के एक प्रमुख पात्र हैं। दा साहब के बहुत करीबी आदमी हैं लाखन सिंह. लाखनसिंह को चुनाव में उम्मीदवारी दर्ज कराकर सीट दी गई है। यह उनके खिलाफ जीतने की राजनेताओं की मानसिकता को दर्शाता है।' महाभोज उपन्यास के हर पन्ने में राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार, नेताओं के दोहरे व्यक्तित्व, अपराधियों को प्रश्रय देना या जनता के प्रति असंवेदनशीलता, अवसरवादिता और नौकरशाही पर अनैतिक दबाव को उजागर करता है।

महाभोज उपन्यास का ताना-बाना सरोहा गांव के नाम के इर्द-गिर्द बुना गया है। सरोहा गाँव उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में स्थित है। सरोहा गांव की हरिजन आबादी के बीच आगजनी की घटना में कुछ लोगों की बेरहमी से हत्या कर दी गई। बिसु के पास इस हत्याकांड के सबूत थे. जिसे वह दिल्ली जाकर सक्षम अधिकारियों को सौंपना चाहते थे और कॉलोनी के लोगों के साथ न्याय करना चाहते थे। लेकिन राजनीतिक साजिश और गुंडे जोरावर की साजिश के कारण दो लोगों को बिसू की चाय में जहर मिलाने के लिए भेजा जाता है। जिससे उसकी मौत हो जाती है. बिसू की मृत्यु के बाद उसकी सहयोगी बिंदेश्वरी उर्फ बिंदा इस प्रतिरोध को जीवित रखती है। बिंदा भी राजनीति और अपराध के चक्र में फंस जाती है और सलाखों के पीछे पहुंच जाती है। अंत में नौकरशाही का एक पात्र, पुलिस अधीक्षक सक्सेना, वंचितों का प्रतिरोध जारी रखता है। कैसे जातिगत समीकरण भारतीय स्थानीय राजनीति का एक अनिवार्य हिस्सा बन जाते हैं। यही उपन्यास की मुख्य चिंता है। पिछड़ी और वंचित जाति के लोगों पर हो रहे अत्याचार और प्रतिनिधि पात्रों द्वारा उनका

Research Review
The Refereed Peer Reviewed International Journal
ISSN: 2321-4708
Vol. 10, Issue: 126, August, 2023
Paper ID: RRJ387067
https://www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/issues/volume-10-issue-126-august-2023/RRJ387067

प्रतिरोध कथा को गति देता है। उपन्यास में मन्नू भंडारी नैतिकता, अंतर्विरोधों, शासक वर्ग के अवसरवादी चरित्र, शासक विरोधी मीडिया और अंतर्विरोधों से जूझ रहे मजदूर वर्ग पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करती हैं।

नायक दा साहब कुटिल चरित्र के हैं. बाहरी स्वरूप शांत-सौम्य और गंभीर दा साहब मुख्यमंत्री हैं। समूह एक चतुर व्यक्ति है. धनी दा साहब को दो शख्सियतों से पहचानना मुश्किल है. दा साहब के विश्वासपात्र दुर्जेय हैं। जो एक बदमाश है. दा साहब सबके सामने जोरावर के बारे में बुरा बोलते हैं। लेकिन पीठ पीछे उसकी मदद करता है. दा साहब में मानवीय पहचान की दृष्टि प्रखर है। यह सामने वाले को एक नजर में ही पहचान लेता है। लोचन बाबू पाक आदमी हैं. ख़राब राजनीति का विरोध करें. कैबिनेट ने लोचनबाबू को कैबिनेट से ही बर्खास्त करने की साजिश रची। दा साहब के चरित्र की विशेषता यह है कि उनकी कथनी और करनी में बहुत बड़ा अंतर है। दा साहब जो बोलते हैं वह करते नहीं। वह केवल इतना जानता है कि जोरावर ने बिसेसर को मार डाला है। हालाँकि वह ज़ोरावर की रक्षा करता है और बिसेस के दोस्त बिंदा को फँसाता है। लोगों के सामने वह कहता है कि बिसू को न्याय मिलना चाहिए और दूसरी तरफ वह बिंदा को फंसा देता है। वह अवसरवादी है. वह मौके के हिसाब से फैसले लेते हैं. चुनाव जीतने के लिए बिसेसर की हत्या का नाटक रचकर जनता में यह संदेश जाता है कि वह गरीबों के साथ हैं. और वह चुनाव जीत जाते हैं. बिसेसर के पिता के लिए एक छोटा सा व्यवसाय शुरू करता है।

मन्नू भंडारी का उपन्यास महाभोज इस मिथक को तोड़ता है कि महिलाएं केवल घर और परिवार के बारे में ही लिखती हैं। या अपनी भावनाओं की दुनिया में जीता और मर जाता है. महाभोज विद्रोह का एक राजनीतिक उपन्यास है। लोकतंत्र में आम लोगों का स्थान कहां है? राजनीति और नौकरशाही के कर्णधार जनता को फंसाने और धोखा देने का जाल बन गये हैं। इस उपन्यास की हर कड़ी महाभोज के दा साहब की उंगली के इशारे तक ही सीमित है. वह एक कुशल प्रशासक हैं. इन्हीं के संरक्षण में समाज राजनीति के खोटे सिक्के चलता है। असली सिक्कों को एक तरफ फेंक दिया गया है. महाभोज एक तरफ तंत्र के चंगुल और दूसरी तरफ लोगों के भाग्य के द्वंद्व की कहानी है। इस महत्वपूर्ण उपन्यास का कई भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है। महाभोज उपन्यास भारतीय राजनीति का दर्पण है।